ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-4* Issue-9* October- 2019
Innovation The Research Concept

भारत के स्वतंत्रता समर में आहूत राजस्थान का चारण परिवार

सारांश

भारत को आजादी प्राप्त करने के लिए बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी, लाखों लोगों को अपने प्राणोत्सर्ग करने पड़े थे। कितनी माताओं के लाल, कितने पिताओं ने अपने पुत्रों की अर्थी को कंधा दिया, कितनी महिलाओं के सुहाग, कितने बच्चों के सिर से पिता का साया उठा.....कुर्बानियों के ठीक से आंकड़े भी नहीं है। राजस्थान के भीलवाड़ा के शाहपुरा के चारण परिवार के त्याग को कौन नहीं जानना चाहेगा। जब राजे–रजवाड़े शान–शौकत में आकंठ डूबे हुए थे, उस समय एक चारण परिवार ने शाही ठाठ–बाठ को छोड़ देश की आजादी की जंग को वरीयता दी। चारण परिवार की समस्त जागीरें, हवेली–सम्पत्ति–गहने–बर्तन आदि सब छिन लिए गए, परन्तु परिवार के किसी सदस्य को इसका रंज मात्र भी अफसोस नहीं था।

मुख्य शब्द : समर, आहूत, तवारीख, दोज़ख, माचातोड़, वायसराय, सोरठा, चूंगट्या।

दिनेश कुमार चारण
एसो. प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग,
राजकीय लोहिया महाविद्यालय,
चूरू, राजस्थान, भारत

रूपा शेखावत
एसोसिएट प्रोफेसर,
राजनीति शास्त्र विभाग,
राजकीय लोहिया महाविद्यालय,
चूरू, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

सन् 1680 जनवरी 25 को औरंगजेब की सेना ने उदयपुर स्थित जगदीश मंदिर में मूर्तियों को तहस–नहस कर मंदिर को काफी नुकसान पहुँचाया था। औरंगजेब की बादशाही तवारीख में दर्ज है कि ''शाही फौज के बहादुर जब काफिरों के मन्दिर के बाहर पहुँचे तो तकरीबन 20 माचातोड़ राजपूत मरना ठानकर बैठे थे, उनमें से हर एक राजपूत हमारे बहुत से मुसलमानों को मारकर मारा जाता था, जब तक आखिरी राजपूत दोजख में गया तब तक हमारे बहुत से वफादार काम आ चुके थे। काफी मशक्कत के बाद शाही फौज ने मंदिर पर फतह हासिल की और फिर मूर्तियाँ तोड़ी।''

वास्तव में तवारीख का संकेत चारण जाति के नरूजी बारहठ की ओर था। जब औरंगजेब ने मेवाड़ आक्रमण के लिए सेनाएँ भेजी तो महाराणा राजसिंह सेना–प्रजा सहित अरावली के सुरक्षित ठिकानों पर जा चुके थे। नरू बारहठ भी कुछ ऐसी ही तैयारी कर रहे थे तो किसी ने कटाक्ष किया कि जिस पोलपात ने पोल पर बहुत से नेग उपहार लिए हैं, वह आज पोल (दरवाजा) कैसे छोड़ सकता है ? यह बात नरूजी को भेद गई और वे अपने 22 चारण–राजपूत साथियों सहित जगदीश मंदिर की रक्षार्थ रुक गए। शाही फौज जब मन्दिर पहुँची तो मंदिर की उत्तरीय खिड़की से एक योद्धा बाहर आया और अनेक सिपाहियों को मारता हुआ वीरगति को प्राप्त हो गया। इस प्रकार बारी–बारी 22 योद्धाओं ने मृत्यु का वरण किया। अन्त में नरूजी बारहठ बाहर आए और बड़ी बहादुरी से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। आन–बान और शान के स्वामी नरूजी बारहठ अमर हो गए। मंदिर के पास आपकी स्मृति में एक चबूतरा बनवाया गया था लेकिन बाद में इस चबूतरे को मजार में परिवर्तित कर दिया गया। ऐसे थे श्री नरू बारहठ, जिन्होंने स्वधर्म की रक्षार्थ प्राणों की तनिक भी परवाह नहीं की।

इन्हीं नरूजी के एक पूर्वज 14वीं शताब्दी में बारूजी चारण हुए, जिनकी सैन्य सहायता से ही महाराणा हम्मीर को अपना खोया राज्य प्राप्त हो सका था। बारूजी की निज सेना में 500 सैनिक हुआ करते थे। एक बार बारूजी एक विवाह उत्सव में बूंदी पधारे तो महाराव लाल सिंह ने उन्हें भेंट देनी चाही। अपने चारण स्वभाव के कारण बारूजी ने इन्कार कर दिया, परन्तु राजा ने हठ पकड़ ली। तब स्वाभिमानी बारूजी ने कहा मेरी एक शर्त है कि मुझे दो मिनट के लिए मेरे कक्ष में जाने दिया जाए। शर्त मान ली गई। बारूजी ने कक्ष में अपने सेवक को आदेश दिया कि मेरा सिर थाली में रखकर राजा को प्रस्तुत कर देना। सेवक कुछ समझ पाता, उससे पहले बारूजी ने अपनी तलवार से

अपना सिर धड़ से अलग कर दिया। सेवक ने आज्ञा का पालन किया.....। क्रोधित मेवाड़ ने बूंदी पर आक्रमण कर दिया, जिसमें लालसिंह मारा गया। ऐसे थे बारूजी, जो माँ भगवती बरबड़ी के पुत्र थे। उस कालखण्ड में माँ बरबड़ी के चमत्कारों से समूचा राजपूताना और गुजरात अभिभूत था। तब से आज तक मेवाड का राजपरिवार व समस्त सिसोदिया राजपूत माँ बरबड़ी को कुल देवी के रूप में पूजते हैं।

ऐसे महान् त्यागी और बलिदानी की वंश परम्परा में ठा. कृष्णसिंह बारहठ, ठा. केसरी सिंह बारहठ, ठा. जोरावर सिंह बारहठ और कुंवर प्रताप सिंह बारहठ जैसी महान् विभूतियाँ अवतरित हुई। ज्ञात रहे कि बारहठ, चारण जाति की ही एक शाखा होती है।

1857 के बाद अंग्रेजी दमन चक्र एवं नीतियों के कारण भारतीय डरे हुए थे। क्रांतिकारी कुचल दिए गए थे। देश में सन्नाटा था। स्वतंत्रता के हिमायती सहमे हुए और मौन थे। ऐसे में उनको स्वर देने का साहस राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा के चारण परिवार ने किया। ठा. केसरी सिंह बारहठ ने राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना जाग्रत करने का अति महत्त्वपूर्ण कार्य किया, जिसकी उस कालखण्ड को नितान्त आवश्यकता थी। उनके पिता ठा. कृष्ण सिंह बारहठ भी एक देशभक्त एवं भारतीय संस्कृति के पुजारी थे; आपके इन्हीं विचारों के कारण अंग्रेजी दबाव में आकर मेवाड़ ने उन्हें राज्य छोड़ने का हुक्म जारी कर दिया और वे मारवाड़ के निमंत्रण पर जोधपुर चले गए। वहीं केसरी सिंह जी, जोरावर सिंह जी व कुँवर प्रताप ने अपनी व अपने परिवार की तनिक भी चिंता नहीं की। मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए तीनों ही सेनानियों ने अपार कष्ट सहे, परन्तु झुके नहीं.....टूटे नहीं।

तीनों ही जानते थे कि स्वतंत्रता उपहार में नहीं मिलती, यह त्याग और बलिदान चाहती है। ठा. केसरी सिंह ने तो अपने जामाता ईश्वर दान आशिया को भी सशस्त्र क्रांति के उद्देश्य से हथियारों के प्रशिक्षण के लिए पुत्र प्रताप के साथ श्री अर्जुन लाल सेठी के स्कूल में जयपुर भेज दिया था। इसलिए एक अवसर पर दिल्ली में सशस्त्र क्रांति के जनक रासबिहारी बोस ने अमीचंद से ठीक ही कहा था कि– ''दुनिया में ऐसे उदाहरण तो मिल जाएंगे कि किसी व्यक्ति ने अपने पुत्रों को देश की रक्षा व आजादी के लिए प्रस्तुत कर दिया हो परन्तु अपने जामाता को भी स्वतंत्रता के युद्ध में प्रस्तुत करने का एक मात्र उदाहरण ठा. केसरी सिंह बारहठ का ही है।'' इसलिए समस्त विश्व में भारतवर्ष के राजस्थान के भीलवाड़ा में स्थित शाहपुरा के चारण परिवार को एक विशिष्ट पहचान व सम्मान के साथ याद किया जाता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में 1903 को कौन भूल सकता है। तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन ने ब्रिटिश किंग एडवर्ड सप्तम के स्वागत में दिल्ली में एक भव्य दरबार का आयोजन किया था, जिसमें सभी राजे–महाराजे आमंत्रित किए गए। मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ने लार्ड कर्जन के भय से दरबार में सम्मिलित होने की सहमति भेज दी। महाराणा का यह फैसला स्वतंत्रता प्रेमियों के लिए, मेवाड़ का अपमान था। ठा. केसरी सिंह बारहठ उस समय जयपुर में राव गोपाल सिंह, ठा. कर्णसिंह, ठा. भूरसिंह व राव उमराव सिंह सहित यह मंत्रणा कर रहे थे कि महाराणा को कैसे रोका जाए। तब गोपाल सिंह जी ने कहा कि राजपूताना में चारणों ने सदैव संकटमोचन का कार्य किया है, अतः इसका निराकरण भी बारहठ जी ही करेंगे। केसरीसिंह जी ने उसी बैठक में 13 सोरठों (दोहों) की रचना करके सभी को सुनाए, जिनमें महाराणा के पूर्वजों के गौरव का गुणगान और वर्तमान महाराणा को लताड़ लगाई गई थी। सोरठे सुनते ही सभी एक स्वर में बोले, वाह....। सोरठों को महाराणा के पास पहुँचाने का दायित्व संभाला राव गोपाल सिंह जी ने। यद्यपि महाराणा की रेल उदयपुर से दिल्ली रवाना हो चुकी थी, लेकिन राव साहब ने भीलवाड़ा के पास महाराणा को चारण कवि का पत्र पहुँचा दिया।

महाराणा का सोया अभिमान जाग उठा और कहा 'काश यह पत्र मुझे उदयपुर में ही मिल जाता। महाराणा फतेह सिंह दिल्ली तो पहुँचे किन्तु दिल्ली दरबार में उनका रिक्त आसन लार्ड कर्जन को शूल की तरह चुभ रहा था। महाराणा को भेजे गए ये 13 सोरठे इतिहास में 'चेतावनी रा चूंगटिया' के नाम से प्रसिद्ध हो गए। ठा. केसरी सिंह बारहठ जानते थे कि वे किस को ललकार रहे हैं। परिणामस्वरूप बारहठ साहब अंग्रेजी रडार पर आ गए और उनकी गतिविधियों पर दृष्टि रखी जाने लगी। इसके बावजूद भी केसरी सिंह जी अपने पथ पर आगे बढ़ते रहे।

एक घटना 1914 की है; जब ठा. केसरी सिंह बारहठ को बन्दी बना लिया तो शाहपुरा के राजा नाहर सिंह ने अंग्रेज भक्ति दिखाते हुए ठा. साहब की जागीर, सम्पत्ति, हवेली, आभूषण और बर्तन आदि जब्त कर लिए। ठा. साहब की पत्नि भगवती स्वरूपा सम्मानीया माणिक कुँवर जी, जोरावर सिंह जी पत्नी, अन्य महिलाओं और बच्चों को हवेली से निकाल दिया गया। सिपाहियों ने माणिक जी को हवेली से बाहर निकालते समय रोका और पूछा कि इस टोकरी में क्या छुपा कर ले जा रही हो ! सिपाही सोच रहे थे इसमें स्वर्ण–आभूषण छिपा कर ले जा रही है। टोकरी की तलाशी ली तो सिपाही चौंक गए, क्योंकि उसमें उनके ससुर साहब ठा. कृष्ण सिंह बारहठ की हस्तलिखित पुस्तक 'राजपूताने का इतिहास' थी। कितने अद्भुत थे इस परिवार के लोग।

ठा. केसरी सिंह जी के अनुज ठा. जोरावर सिंह जी ने लगभग 28 वर्ष फरार काटी, अंग्रेज लगातार पीछा करते रहे लेकिन आप भेष और स्थान बदलते रहे। इस दीर्घ अवधि में जोरावर सिंह जी केवल प्राण रक्षा के लिए नहीं भटक रहे थे। इस काल में भी वे साधु के भेष में दक्षिणी राजस्थान, मालवा और गुजरात के लोगों में सामाजिक–राजनीतिक चेतना जगाने का कार्य करते रहे। उनका एक मात्र उद्देश्य रहा विदेशी राज्य का अंत।

स्वतंत्रता सेनानी श्री रामनारायण चौधरी लिखते हैं कि मृत्यु से कुछ समय पूर्व ठा. केसरी सिंह जी बारहठ ने कोटा से गांधी जी को पत्र लिखा था कि ''मेरी सत्तर वर्ष की इन बूढ़ी हड्डियों में स्वदेश के लिए आहुति देने का अभी बल है और प्रबल इच्छा भी है।''

एक अन्य घटना; ठा. केसरी सिंह बारहठ के पुत्र कुं. प्रताप सिंह बारहठ के बनारस षड़यंत्र केस में वारंट कट चुके थे। पिता ठा. केसरी सिंह जी जेल में, चाचा श्री जोरावर सिंह के पीछे पुलिस लगी हुई थी, सम्पत्ति छिन चुकी थी, रिश्तेदार भी प्रताड़ित किए जा रहे थे, औरतों, बच्चों के रहने का कोई ठिकाना नहीं था। कुं. प्रताप सिंह को भी घर छोड़ना था, रूपये थे नहीं, तो माँ माणिक कुँवर से कहा कि ''माँ धोती पुरानी हो गई, दो–तीन रूपये मिल जाते तो! माँ के पास भी कुछ नहीं था फिर भी कहीं से दो रूपये का इन्तजाम हो गया और प्रताप रूपये लेकर निकल पड़े। बाद में जब माँ को सच्चाई की जानकारी हुई तो माँ के उद्‌गार थे– ''बेटा तू सच कहता तो मैं तुझे दो नहीं चार रूपये देती और माथे पर तिलक लगाकर विदा करती।''

बरेली जेल में कु. प्रताप सिंह को समस्त प्रकार के प्रलोभन दिए गए, अंग्रेजों का विचार था कि 22 वर्ष का यह युवा लोभ में आकर बनारस षड़यंत्र केस के सब राज उगल देगा और उसके साथियों के नामों की जानकारी मिल जाएगी। प्रलोभनों में यह भी था कि जेल में बन्द पिता ठा. केसरी सिंह को मुक्त, चाचा जोरावर सिंह के वारंट रद्‌द, जब्त समस्त सम्पत्ति, जागीर और हवेली, ऊँचा पद और ढ़ेरों पुरस्कार दिए जाएँगे। परन्तु कु. प्रताप टस से मस नहीं हुए। उसके बाद अंग्रेजों ने इमोशनल कार्ड खेला। बन्दी पिता–पुत्र को एक–दूसरे के सामने लाया गया ताकि प्रताप, अपने पिता की अवस्था देखकर द्रवित हो जाए। पिता को नवयुवक पर संदेह हुआ तो पुत्र ने कहा 'चिन्ता ना करे दाता, मै आपका पुत्र हूँ।'

इसके बाद अंग्रेजों ने माँ का वास्ता दिया और कहा कि ''तुम्हारी माँ तुम्हारा बहुत इन्तजार करती है, घर के दरवाजे रात को भी खुला रखती है कि क्या मालूम बेटा कब आ जाए और बहुत रोती है'' तो कु. प्रताप ने जो उत्तर दिया वो इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया ''मैं, मेरी माँ के आसुओं को रोकने के लिए देश की हजारों माताओं को नही रुला सकता।''

अंग्रेज अधिकारी क्लीवलैंड ने बनारस जेल में कुं. प्रताप सिंह को यातनाएँ देकर कठोरता से गहन पूछताछ के पश्चात टिप्पणी की कि– ''मैंनें आज तक प्रताप सिंह जैसा वीर और विलक्षण बुद्धि वाला युवक नहीं देखा। उसे सताने में हमने कोई कसर नहीं रखी पर वह टस से मस नहीं हुआ। हम सब हार गए वह विजयी हुआ।''

इसके बाद प्रताप सिंह के शरीर पर अंग्रेजी अत्याचारो की दास्तान लिखी गई ; रोजाना कोड़े बरसाए जाते, जख्मों पर नमक लगाया जाता, भूखा–प्यासा रखा जाता..... लेकिन वीर युवक ने मुँह नहीं खोला। अन्ततः कष्ट सहते–सहते कु. प्रताप सिंह मातृभूमि की रक्षा के लिए शहीद हो गए। धन्य है.....

इतिहास गर्व करता है ऐसे पुत्र पर, ऐसे माता–पिता पर। महान परिवार; राजसी ठाठ–बाठ से रहने वाला परिवार; लेकिन मातृभूमि की रक्षा के लिए सर्वस्व न्यौंछावर कर दिया, ऐसा उदाहरण विश्व में अन्यत्र दुर्लभ है।

यहाँ चारण जाति के विषय में जानना भी समीचीन होगा। चारण एक प्राचीन जाति है, जिसका वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता आदि धर्मग्रन्थों, बौद्ध एवं जैन साहित्य में गौरवमयी उल्लेख मिलता है। चारण जाति अपनी ओजस्वी वाणी, काव्य प्रतिभा, विद्वता, धर्मप्रियता, अनुपम त्याग, निर्भीकता, वीरता एवं सत्यनिष्ठा के लिए समूचे राजपूताना और गुजरात में विख्यात है। गुजरात में चारण, गढ़वी कहलाते हैं। चारण जाति को वरदान है कि समय–समय पर इस जाति में देवियां जन्म लेंगी। इसीलिए अभी तक चारण जाति में चौरासी प्रमुख देविंयाँ अवतरित हुई, जो लौकिक एवं ऐतिहासिक है। इन महाशक्तियों ने समय–समय पर समाज व राज को दिशा प्रदान की है। वर्तमान काल में भी चारण देवियाँ अपने भक्तों को निराश नहीं करती है।

हिंगलाज माता आदि देवी है, जिनका मन्दिर पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान प्रान्त में स्थित है। राजस्थान के जैसलमेर में पाकिस्तान सीमा पर तनोट में आवड़ माता का मंदिर है, जिनके चमत्कार को भारत–पाक युद्ध में भारतीय सुरक्षा बलों (BSF) ने साक्षात् देखा; जिसे भारत सरकार ने भी स्वीकार किया है। इसीलिए तनोट मन्दिर की साज–संभाल व पूजा–अर्चना भारतीय सुरक्षा बल द्वारा की जाती है। बीकानेर का देशनोक स्थित श्री करणी माता मंदिर तो विश्वविख्यात है ही। चारण देवियाँ राजपूत राजवंशों में विशेष पूजनीय रही हैं। इसीलिए राजपूत भी चारणों की तरह सम्बोधन में एक–दूसरे को 'जय माता जी की' ही कहते है।

चरणों को देवीपुत्र भी कहा जाता है। इसी कारण राजपूत राज्यों में चारणों का अत्यधिक सम्मान रहा है। राजपूत राज्यों में ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा पहले जैसी नहीं रही थी, इसीलिए ब्राह्मणों की लेखनी में चारणों के प्रति द्वेष स्पष्ट दृष्टिगत होता है। ब्राह्मणों ने चारणों को इतिहास में हेय बताने की चेष्टा की है, चाहे फिर वो सायणाचार्य हो या स्वतंत्र भारत के आधुनिक इतिहासकार। जबकि सभी राजपूत इतिहासकार व विद्वान एक मत से चारणों को श्रेष्ठ बताते हैं, फिर चाहे वो मारवाड़ के महाराजा मानसिंह जी हो या आधुनिक काल के राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर।

चारण जाति, क्षत्रियों अर्थात् राजपूतों में विशेष पूजनीय है। राजपूत शासकों के शिक्षक, राजकवि, इतिहासकार, परामर्शदाता, गाईड व फिलोसोफर चारण ही होते थे। चारणों ने कविता द्वारा राजपूतों के शौर्य को जीवित रखा। चारण कवि अपने शासकों की प्रशंसा ही नहीं, कर्त्तव्यविमुख होने पर कटु निंदा भी करते थे। चारण कवियों ने निरंकुश और निकम्मे शासकों की जिस निडरता से कटु आलोचना की है, उसकी समता का उदाहरण दुनिया में दुर्लभ है। उत्कृष्ट का अभिनन्दन और निकृष्ट का निन्दन चारण कवियों की सहज प्रवृत्ति रही है। चारण की प्रशंसा में कहीं भी चाटुकारिता नहीं होती है तो निन्दा में कहीं भी द्वेष नहीं होता है। चारण–रोष से राजा दहल जाते थे। सत्याग्रह के जनक भी चारण ही थे। जिसके सहारे गांधी जी ने अंग्रेजों को परास्त किया। वर्तमान में जैसा कार्य निष्पक्ष व निर्भीक

पत्रकार करता है, वैसा कार्य राजतंत्र में चारण करता था। वह राजा व प्रजा के बीच सेतु था।

चारणों पर आक्षेप है कि वे अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन से अपने आश्रयदाता की झूठी प्रशंसा करते थे, परन्तु उन्हें यह समझना होगा कि आत्मगौरव का भाव भरे बिना कोई व्यक्ति प्राण देने के लिए कैसे तैयार किया जा सकता है ? अतः चारण ही उन्हें मातृभूमि के लिए हंसते–हंसते प्राणोत्सर्ग के लिए प्रेरित करते थे।

राजाओं ने चारणों को कर मुक्त भूमि व लाखों–करोड़ों के ईनाम दिए। चारण कभी भी धार्मिक दान ईमान नहीं लेते थे। वे ईनाम भी केवल राजा, सामन्त या जागीरदार से ही लेते थे, इसके अतिरिक्त किसी गैर राजनीतिक राजपूत या सामान्य राजपूत (चाहे वह कितना भी धनी हो) से ईनाम लेने का अपवाद भी नहीं मिलेगा। किसी अन्य जाति के बड़े से बड़े आदमी को यह साहस भी नहीं था कि वो चारण के सम्मुख ऐसा प्रस्ताव रख सके। चारण बहुत ही स्वाभिमानी, राष्ट्रभक्त, नैतिक–चारित्रिक बल वाले, देवी उपासक तथा कलम व तलवार के धनी होते थे। उनके रीति–रिवाज, लोकव्यवहार, वेशभूषा, रहन–सहन, खान–पान व जीवन शैली आदि सब बातें राजपूतों के समान है। चारण–राजपूतों के परम्परागत साहचर्य एवं भ्रातत्व की पवित्रता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि आपस में विवाह–सम्बन्ध नहीं होता है। इसी कारण राजपूत नरेशों ने संकट काल में चारणों के यहाँ शरण ग्रहण करने में संकोच नहीं किया तथा चारणों ने भी इस विश्वास का स्तुत्य निर्वाह किया। एक समय था जब राजपूतों और चारणों में एक दूसरे के लिए मर–मिटने की दूध और पानी जैसी मनोवृत्ति थी।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध पत्र के दो उद्देश्य हैं। प्रथम, भारत के स्वतंत्रता समर में आहूत राजस्थान के भीलवाड़ा में स्थित शाहपुरा के चारण परिवार के त्याग व बलिदान के विषय में जानकारी देना, जिसमें ठा. केसरी सिंह बारहठ, उनकी पत्नि माणिक कुंवर, भाई जोरावर सिंह बारहठ, दामाद ईश्वर दान आशिया एवं पुत्र प्रताप सिंह बारहठ आदि विशेष उल्लेखनीय है। द्वितीय, राजस्थान की चारण जाति का संक्षिप्त परिचय देना, जिसमें 'चौरासी' देवी अवतार, असंख्य सच कहने वाले कवि–साहित्यकार–लेखक–इतिहासविज्ञ एवं स्वतंत्रता सेनानी हुए हैं।

निष्कर्ष

भारत के स्वतंत्रता समर में आहूत राजस्थान का चारण परिवार बहुत ही महान परिवार था। इस परिवार के सभी सदस्य त्याग और बलिदान में श्रेष्ठ रहे। 14वीं शताब्दी में शक्ति की अवतार भगवती बरबड़ी के पुत्र बारूजी चारण से लेकर 20वीं शताब्दी में कुंवर प्रताप सिंह बारहठ तक सभी ने स्वाभिमान और राष्ट्र को सर्वोच्च माना, यदि आवश्यकता पड़ी तो प्राणों का मोह भी त्याग दिया। इनके महान उद्देश्यों के समक्ष आरामदायक जीवन और सम्पत्ति बहुत तुच्छ थी। ठा. केसरी सिंह बारहठ ने स्वयं सहित भाई, पुत्र, दामाद, सम्पत्ति, जागीर, हवेली, आभूषण और बर्तन तक सब न्यौंछावर कर दिया, परन्तु परिवार के महिला–पुरुष तथा छोटे–बड़े किसी को भी पश्चाताप नहीं था क्योंकि वो जानते थे कि किसी देश की गुलामी कितनी हेय होती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

श्रीमद्भगवतगीता– गीताप्रेस, गोरखपुर 2018
संक्षिप्त महाभारत– गीताप्रेस, गोरखपुर, 2017
वाल्मीकि रामायण– गीताप्रेस, गोरखपुर, 2018
भागवत पुराण– गीताप्रेस, गोरखपुर, 2018
ठा. किशोरसिंह बार्हस्पत्य– श्री करणी चरित्र, बीकानेर, 2006
कविराजा श्यामदास– वीरविनोद, जोधपुर, 2019
ठा. कृष्णसिंह बारहठ– राजपूताने का इतिहास, जोधपुर, 2019
ठा. केसरी सिंह बारहठ– चेतावनी रा चूंगट्या, जयपुर, 2013
जी. एच. ओझा– राजपूताने का प्राचीन इतिहास
डॉ. मथुरा लाल शर्मा– कोटा राज्य का इतिहास, जोधपुर, 2016
सवाई सिंह धमोरा–ठाकुर केसरीसिंह बारहठ (पुण्य–स्मरण), (सम्पादित)
डॉ. रघुवीर सिंह– पूर्व आधुनिक राजस्थान
रामनारायण चौधरी– बीसवीं सदी का राजस्थान
सचीन्द्र सान्याल– बन्दी जीवन
राजेन्द्र शंकर भट्ट– राजस्थान का सांस्कृतिक प्रवाह
डॉ. कमलेष माथुर– राजस्थान का इतिहास
डॉ. के. एस. सक्सेना– राजस्थान में राजनैतिक जन जागरण
डॉ. आर.पी. व्यास–आधुनिक राजस्थान का वृहद इतिहास (1,2)
डॉ. मोहन लाल गुप्ता– क्रान्तिकारी बारहठ केसरी सिंह
ओंकार सिंह लखावत– स्वातंत्र्य राजसूय यज्ञ में बारहठ परिवार की महान आहूति
डॉ. एच.सी. जैन– ऐतिहासिक राजस्थान
डॉ. एम.एस. जैन– आधुनिक राजस्थान का इतिहास
डॉ. जी.एन. शर्मा– राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास
डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर– राजस्थान के रजवाड़ों का सांस्कृतिक वैभव
डॉ. एस.एस. रत्नावत एवंडॉ. के. जी. शर्मा– चारण साहित्य परम्परा (सम्पादित)
मोहन सिंह– शेखावाटी में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास
डॉ. आर. एल. शुक्ल– आधुनिक भारत का इतिहास राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर (राजस्थान)